

ॐ श्री श्री गौरांगविभुर्जयति ॐ

ब्रजभाषा में—

श्री राधाकृष्ण रस सागर



श्री श्री कविवर मनोहरदासजी कृत



अर्थसहायक—

गौरनिष्ठ श्रीमान् राजा रघुनंदनप्रसादजी

मृंगेर (बिहार)



प्रकाशक—

बाबा कृष्णदास

कुसुमसरोवर, (गोवर्द्धन) मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ।



अक्षयतृतीया
संवत् २००८]

नौछावर—
[मूल्य १]

❀ श्री श्री गौरांगविधुर्जयति ❀

ब्रजभाषा में—

श्री राधाकृष्ण रस सागर

श्री श्री कविवर मनोहरदासजी कृत



अर्थसहायक—

गौरनिष्ठ श्रीमान् राजा रघुनंदनप्रसादजी

मूंगेर (बिहार)



प्रकाशक—

बाबा कृष्णदास

कुसुमसरोवर, (गोवर्द्धन) मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।



अक्षयतृतीया
सम्बत् २००८]

नौछावर—
[मूल्य १)

॥ भूमिका ॥

प्रेम पुरुषोत्तम, प्रेमावतार, भगवान, श्रीकृष्णचैतन्य महा-
प्रभु ने इस पुनीत धराधाम में अवतीर्ण होकर जगत को जो अपना
विशुद्ध प्रेम-रस का सरस आस्वादन कराया है उसका जीव मात्र
ही अवश्य महान् आभारी रहेगा। श्री ब्रज-राजनन्दन हरि का गौरांग
रूप से नवद्वीप में अवतीर्ण होने का मूल कारण था अपनी
परम प्रेयसी राधिका के भाव प्रेम का आस्वादन तथा साथ ही
साथ अनर्पित निज-भक्ति योग का जीव जगत् के लिये दान।
श्री प्रभु ने धरा में प्रकट हो कर जगह जगह पर भक्ति विद्यालय
की स्थापना कर अपनी प्रेम महाविद्या का जीव छात्रों को पाठ
पढ़ाकर, तथा रूप, सनातन प्रभृति पार्षद गणों को अवतारित करा
कर उन विद्यालयों में प्रधान २ अध्यापक रूप से नियुक्त किया,
जिससे कि प्रेम महाविद्या का दान धारावाहिक रूप से चल सके।
उन विद्यालयों में नाम सं कीर्तन पाठ ही प्रधान रूप से रखा गया।
वृन्दावन नवद्वीप और नीलाचल क्षेत्र ही प्रधान विद्यापीठ रूप से
माना गया है। रूप, सनातन प्रभृति प्रभु पार्षदों ने वृन्दावन धाम
में आकर उसका पुनरुद्धार किया तथा साथ ही साथ असंख्य
भक्ति ग्रन्थों की रचना कर उन भक्ति विद्यालयों में उन्हें पाठ ग्रन्थ
निर्धारित किया। यह सब ग्रन्थ अधिकांश रूप से संस्कृत भाषा
तथा बंगभाषा और ब्रजभाषादि में रचे गये हैं।

गौड़देवर सम्प्रदाय में जिस प्रकार संस्कृत तथा बंग भाषा
में रचित ग्रन्थों की कोई इयत्ता नहीं है ठीक उसी प्रकार ब्रज भाषा
में रचित ग्रन्थों की भी कोई इयत्ता नहीं। बड़े विमर्ष की बात यह
है कि ब्रज भाषा के वे सब ग्रन्थ अधिक संख्या से न जाने कहाँ

किसके हाथ में पड़ गये । तो भी अत्यन्त चेष्टा के साथ कुछ ग्रन्थों को खोज कर जनता के सामने रख चुका हूँ । अब गुरु वैष्णव कृपा से कविवर श्री मनोहर दास जी के द्वारा विरचित इस “राधारमण रस सागर” नामक ग्रन्थ को रसिक समाज के आगे रखने में समर्थ हुआ हूँ । पूज्य बंधुवर गोस्वामी श्री अतुलकृष्ण जी (बृंदावन) के द्वारा उन्हीं के पुस्तकालय से ही यह ग्रन्थ मुझे प्राप्त हुआ, साथ ही साथ मिलान करने के लिये श्री गोस्वामी अद्वैत चरण जी (बच्चा जी) के पुस्तकालय से (प्रातः स्मरणीय-श्री राधा चरण गोस्वामी जी के द्वारा संचित) एक प्राचीन हस्त-लिखित ग्रन्थ मिला । उन दोनों महानुभावों के प्रति मैं तथा भक्त समाज आभारी हूँ ॥

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न के निर्माण कर्त्ता कविवर श्री मनोहरदास जी महोदय हैं । आप श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी जी के परिकर में श्री राधारमण जी के सेवक हुए । श्री रामचरण चट्टराज आप के गुरु थे । ग्रन्थकार का विशेष परिचय देना पुनरुक्ति मात्र है । यह महाशय भक्तमाल के प्रसिद्ध टीकाकार श्री प्रियादास जी के गुरुदेव थे । इन्हीं के कृपा बल से श्री प्रियादास महोदय भक्तमाल की टीका लिखने में समर्थ हुए । भक्तमाल टीका के प्रारम्भ में स्वयं प्रियादास जी कहते हैं कि—

महा प्रभु कृष्णचैतन्य मनोहरण जू के चरण को ध्यान मेरे नाम मुख गाइये । ताही समै नाभा जी ने आज्ञा दई लई धारि, टीका विस्तारि भक्तमाल की सुनाइये ॥ इत्यादि ।

निःसंदेह कविवर मनोहर जी उस समय बृंदावन में परम रसिक शिरोमणि माने जाते थे । बड़े बड़े महानुभाव आकर उन के संसर्ग से रसिक बन जाते थे । इस विषय में टीका के परिशिष्ट में प्रियादास जी कहते हैं किः—

रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई,
भई सरसाई हिये नब नब चाय हैं ।

उर रंग भवन में राधिकारमण बसैं,
लसैं ज्यों मुकुर मध्य प्रतिबिंब भाय हैं ॥

रसिक समाज में बिराज रसराज कहैं,
चहैं मुख सब फूलैं सुख समुदाय हैं ।

जन मन हरि लाल मनोहर नाम पायो.

उन हूँ को मन हरि लीनौ ताते राय हैं ॥ क० ६२७ ॥

इनहीं के दास दास दास प्रिया दास जानौ,

तिन लै बखानौ मानौ टीका सुखदाई है ॥ इत्यादि

प्रस्तुत ग्रंथ का रचना काल १७५७ संवत् है इस ग्रंथ में श्री राधा रमण जी का हर ऋतु में हर प्रकार का शृंगार, भोग, शयन, विलास आदि सरस भाव से वर्णित है । इस में भी सारी शुकों का परस्पर प्रेम कलह विशेष आस्वादनीय वस्तु है । इस ग्रंथ के बारे में अधिक क्या कह सकता हूँ सामने रखा है रसिक पाठक देख लें । आशा है रसिक समाज इस ग्रंथ को कंठ धन कर के इस से श्री राधा-रमण जी की दैनन्दिनी सेवा परिचर्या का सरस अनुभव करेंगे । मनोहर जी के द्वारा रचित और भी अनेक ग्रंथ हैं । संप्रति हमारी खोज में रसिक जीवनी, सम्प्रदायबोधिनी नामक दो ग्रंथ प्राप्त हुए हैं । “क्षणदागीति चिंतामणि” ग्रंथ भी इनके द्वारा विरचित है ऐसा अनुमान किया जाता है क्योंकि उस में अधिकांश पद मनोहर जी के हैं । और भी इनके द्वारा रचित भहाप्रभु संबन्धी अनेक सुंदर पद हैं । उन सबको यथा समय प्रकाशित करने की इच्छा है ।

वैष्णवदासानुदास—

कृष्णदास ।

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

अथ श्री राधारमण रस सागर नाम लीला लिख्यते

प्रथम प्रणाम गुरु श्री रामसरण नाम,
चट्टराज चरण सरोज मन भायौ है ।
कृपा करि दीनी दिक्षा सिक्षा परिचर्या निजु,
राधिका रमण बृन्दावन दरसायौ है ॥

सद्गुण समुद्र दयासिंधु प्रेम पारावार,
सील सदाचार कौ कवित्त जग छायायौ है ।
ता दिन सफल जन्म भयौ है अनाथ बंधु,
मनोहर नाम राखि मोहि अपनायौ है ॥ १ ॥

छप्पै—श्री चैतन्य कृपालु कृपा करि भट्ट गोपालै ।
तिन श्रीनिवासाचार्य्य वर्य्य करुणा कौ आलै ॥
रामचरण तिन कृपा चक्रवर्ती विख्याता ।
रामसरण चट्टराज कृपा तिन सारहि ज्ञाता ॥
शुद्ध भक्ति रस राग तिन करुणा करि दीक्षा दई ।
दास मनोहर नित्य गुरु पद धूली सिर पर लई ॥ २ ॥
जिनके सब अवतार सकल गुन आगर दरसैं ।
अवतारी नंदलाल ख्याल अतुलित रस बरसैं ॥
अलप बहुत गुननि रखि हरषि अनुगुन अनुसरहीं ।
पात्र काल अरु देस लेस सेवन मन धरहीं ॥
सेवा जगत उद्धार हित कोउ लछ नाहिंन कियौ ।
करुणा विभु चैतन्य प्रभु सरण मनोहर कौ दियौ ॥ ३ ॥

कवित्त—

सद्गुण समूह बन्यौ वैशाखी रंगिली पून्यौ,
 राधिका रमन मन सखी जन जानिकैं ।
 अभ्यंग कै उबटि सुगंधि केसन में डारि,
 अभिषेक सीतल यमुना जल छानि कै ॥
 चंद्रकांति मणि की मटुकी मथना सौं नीर,
 भरि भरि द्वारै मंजरी में गुन सानि कै ।
 नाना मन्त्र ऊखदी विविध बाजे यन्त्र मिलि,
 मनोहर गावैं गीत तानन सौं वानि कै ॥६॥
 स्नान समापन करि अंगन अंगौछि धरी
 कुन्तल निचोरि भारि पवन सुकाइ कै ।
 जरी पाग पटुका केसरी उपरेंना भगा,
 सूथन मसरू नाना भूषन बनाइ कै ॥
 तैसी प्रिया बनि ठनि बाम भाग सिंहासन,
 ठाढ़े गौर श्याम भलकनि रही छाइ कै ।
 राधिका-रमण परिजन थाल उतारत
 आरती मनोहर निरखि छवि आइ कै ॥१०॥
 केसर की भूमिका पै जरी खिरकी की पाग,
 भूमिका कनक स्वच्छ मोर पच्छ लटकै ।
 भगा बूँटेदार दोदामी को कष्ट बार रग्यों,
 उपरेंना पटुका सुनेली चित्र चटकै ॥
 छुद्राबलि बाजूबंद पहुचीयां अतलस
 सूथन नूपुर सुर पग चूरो मट कै ।
 जगमग राधिका रमण सिंहासन ठाढ़े
 मनोहर मन मुसकान माँहीं अटकै ॥ ११ ॥

जेते हरि धाम मध्य मथुरा महत यश,
 ताहूतें सरस वृंदाविपिन भवन हैं ।
 रमा वृन्द वंद्य पुर सुन्दरी विशेष ब्रज,
 कीरति सुता स्वरूप तिन्हू के दवन हैं ॥
 लीला की विचित्रताई मुरली की सुघराई,
 प्रेमाधीन शोभा पाइ सबनु नवन हैं ।
 जानै मनोहर भन सर्वोपरि उपासन,
 राधिका रमन बिन दूसरौ कवन है ॥१२॥
 अगणित अवतार निखिल निगम सार,
 प्रमदा अपार नित्य दास्य के भवन हैं ।
 इहाँ छिन छिन मान कबहुँ निदान बिन,
 हा हा खाइ हारि मानि मखिनु नवन हैं ॥
 कबहुँ कपाटी पारें कभूँ अलका सुधारें
 कबहुँ बिचारें श्रम करत पवन हैं ।
 मनोहर जल मीन प्रेयसी के प्रेमाधीन
 राधिकारमण बिन दूसरौ कवन हैं ॥१३॥
 पिता ब्रजराज माता यशोदा करोर प्राण,
 धारें व्यवहार मार जानें न कवन हैं ।
 प्रिया मन भाई सोभा गुन की गरुरताई,
 किशोरता स्थाई सुघराई की अवन हैं ॥
 होत ही मनोरथ सकल सोंज पैये तहाँ,
 वृंदा टहलनी वृन्दावन सौ भवन है ।
 निरवधि अवधि मनोहर बिहारी सखी
 राधिकारवन बिन दूसरौ कवन है ॥१४॥

पतिव्रता सिरोमणि कमला गंभीर गुण,
 तिनहूँ उपजै लोभा सोभा कौ भवन है ।
 सेवन तनक किए मानत अनेक करि,
 आपहि बिकाइ ताके गोंहन गवन है ॥
 में तौ कितौ कहूँ भागवत में भरत साखि,
 जिनके प्रमाण अर्थवाद कौ दवन है ।
 मनोहर मन ज्ञाता छवि की अवधि तासु
 राधिका रमन बिन दूसरौ कवन है ॥१५॥
 थिरचर विपरीत यमुना रहित नीत,
 सुधि की व्यतीत गीत थकित पवन है ।
 स्वर परतहीं कान भूली है समाधि ज्ञान,
 सबही की एकता न माथे कौ नवन है ॥
 धुनि गोपिन पै जाइ कृत करिवौ भुलाइ,
 आरज छुटाइ पथ पिय पै गवन है ।
 रीझौ मनोहर मन मुरली प्रताप शुन
 राधिका रवन बिन दूसरौ कवन है ॥१६॥
 ॥ अथ—सरद विहार वर्णन ॥
 श्याम सारद प्रदोष श्यामा अभिसार सौंज,
 सबनु सिंगार रचि आपुस में रीझी हैं ।
 तैसौई बनाउ निज देखन न पावै कोऊ,
 तोऊ अनुसार चलीं अनुराग भीजी हैं ॥
 मन कौ उछाह नाह अंग अंग रचि रहे
 धीरज धरन नाम सुनि सुनि खीजी हैं ।

राधिका रमन कौ मिलाप कौ लखाउ नाह
 मनोहर वचन विलास सुनि धीजी हैं ॥१७॥
 निसि अँधियारी भारी भृगमद सों सवारी,
 प्यारी नील भूषन वसन अंग अंग में ।
 पिय पै गवन कीनें सखी मुख सुख भीनें
 एक तें सरस एक राची प्रिय रंग में ॥
 अगनित अभिलाष हियें मांह पूरि राख,
 आपनपौ भूलि भूलि जात एक संग में ।
 राधिकारमन देखि जनम सुफल लेखि,
 मनोहर नैन परैं छावि की तरंग में ॥१८॥
 सरद की रेनि उजियारी अभिसार प्रिया,
 प्रीतम पै सेत सारी खौर अंग कीने हैं ।
 मालती मुक्ता मल्ली माला अंग अंग सोहें,
 आभूषन हीरनि जटित रंग भीनें हैं ॥
 चाँदनी में मिलि चलीं देवन न पावै अली,
 अंग की सुगंधि अनुसार कें हूं चीनें हैं ।
 राधिका खन मिले मनोहर भौंति भौंति,
 खिले नैन भिले मानो शोभा जल मीनें हैं ॥१९॥
 प्रिया पीउ सुख सानें दूती के वचन मानें,
 अभिसार बानें दोऊ निज निज ठौरतें ।
 चँदन चरचि गात सेत बागे फहरात,
 उजियारी रात निकसे हैं पक्ष पौर तें ॥
 संकेत में आइ मिले निरखत नैन खिले
 हाव भाव भिले उभ रस भरे गौर तें ।

चले राधिका रमन वहाँ जोटी बृन्दावन,
 बचन स्वन से अमी छूटें चहुँ ओरतें ॥२०॥
 गुरु जन बचन की घातें बहु मातें करि,
 चली हैं लडेंती सेत भूषन बसन हैं ।
 तैसे परिजन बनें एक रस एक मनै,
 प्रिया सुख सनें त्रिवें सरस हसन हैं ॥
 मिलावे के मनोरथ फैलि रहैं अंग अंग
 श्रमनीर वारें पौन प्रेम कौ कसन हैं ।
 रमण मिलाप राधा पूजी है दुहुनि साधा,
 मनोहर नैन शोभा सागर धसन हैं ॥२१॥
 राधिका-भिसार सुनि चले हैं रमण लाल,
 उताबल मलयज खौर सी बनाइ कै ।
 देह की न सुधि बेस भूषण बनावै कौन,
 अस्त व्यस्त चतुराई मानत सरबाइ कै ॥
 पथ अनपथ कछू भावै न विचार ढार
 सुरत सखी लै चली मन बहराइ कै ।
 दोऊ ललचौहैं नैन चह चारी सेंना बेन,
 देखत मनोहरनि पटनीरें आइ कै ॥२२॥
 छपै—सजलजलद तन दमक चमक चख चकित तडित पद ।
 मोर मुकट भल मलै चलै मृदु मरुत जमुना तट ॥
 अंग तृभंगी बलित ललित भूषन मनरन्जन ।
 अरुण अधर मधु बेन नैन नृत्यत युग खंजन ॥
 छरी टेकि दक्षिण भुजनि मणिकुंडत मंडित श्रवण
 वाम मनोहर दाम बन जै जै श्री राधारमण ॥२३॥

सारद विमल राका उडपति उदै देखि
 फूले द्रुम बल्ली मल्ली आदि अधिकारि है ।
 चाँदनी हू चहुँ ओर पत्र पत्र फैल रही,
 दक्षिण पवन मंद मंद गति भाई है ॥
 कोइल मधुप धुनि सुनि सुनि रेन सुख,
 राधिका रमण कल वंशी तान गारि है ।
 मनोहर-ताकी सीवां श्रवण परसि ग्रीवां,
 भूमि ब्रजबाला प्रीत नख सिख छारि है ॥ २४ ॥
 तैसी रही जोइ सोइ चली है तमकि तैसी,
 काहू की न माने कोऊ आतुरता बढ़ी है ।
 अस्त व्यस्त भूषन बसन मन मन काज,
 मनमथ राज चटसार मानों पढ़ी है ॥
 सनमुख नाद सुधी गति में न भई बाधा,
 आगे पूजी साधा प्रेम गजराज चढ़ी है ।
 रमण सौं मिली राधा शोभा सिंधु तें आगाधा,
 मानौ हर मूरति सनेह साँचे गढ़ी है ॥ २५ ॥
 देखते ही राधिका रमण भाव सबन के,
 उठे अनगनित न ओर छोर पावहीं ।
 वचन विलास भए प्रेम कसि कसि लएं,
 एक ते सरस एक तन मन भावहीं ॥
 हँसि मुसकाइ सेन नैनन नचाइ शोभा,
 संपति दिखाइ सुघराई ठौरि लावहीं ।
 मनोहर सबै भाँति फूले अङ्ग में मात,
 उमगि उमगि उमै गुन गन गावहीं ॥ २६ ॥

जमुना पुलिन माहिं नलिन सुगंधि लै लै,
सीतल समीर धीर बहै चहूँ ओर ते ।
फूली हैं विचित्र कुँज गुँजत मधुप पुँज,
कुसुमित सेज प्रिया पीय चित चोर ते ॥
हास परिहास रस दुहँनि प्रणय बस,
सुघराई बैन सैन नेनन की कोरते ।
राधिका-रमण प्रीति छिन छिन नई रीति,
मनोहर मीत मिलि खेलें नेह जोरते ॥ २७ ॥
सब ब्रजबालन के कीनें परितोष महा,
नागर शिरोमणि प्रकाश अनकूल हैं ।
अरस परस रस चातुरी बिलास बस,
एक ते सरस एक सुघराई मूल हैं ॥
राजा मनमथ नीकै सिंगार्यौ अपने हाथ,
शोभा के समूह नख सिख फबे फूल हैं ।
राधिका-रमण चित्रनायक अभूत देखि,
मनोहर मन कों अपनपौ कों भूल हैं ॥ २८ ॥
अपने अर्धान कीनें राधिकारमण लाल,
श्रम जल सीकरनि कर शोभा देत हैं ।
मलय पवन जाल रंघन प्रबेस पाइ,
अंग अंग अनकूल सेवा सुख लेत हैं ॥
भरे घर के से चोर मनोहर ते न भए,
अवलोकै पौरुष मनोज महा खेत हैं ।
रीझ रीझ बलिहारी तृण तोरि तोरि डारि,
एक ते निपुन एक रस के निकेत हैं ॥ २९ ॥

अरस परस बेष भूषन बसन सजे,
 बजे निकसे हैं कुँज कुँज ते खिलोंना से ॥
 नख सिख दूनों रङ्ग राधिका रमण सङ्ग,
 सोहें अंग अंग मनमथ के विलोंना से ॥
 निपट सनेह मेह देह की न सुधि जहाँ,
 सोभा औ सुठै नता के रोचक सलोंना से ।
 याही रस मनोहर भीज रहें रेन दिन,
 ऐसे बिनु और स्वाद लाजत अलोंना से ॥३०॥
 सरद की चांदनी रही है दशों दिशा छाड़,
 कुसुमित कुँज अलि पुँज गुँज माधुरी ।
 दोऊ बागे उज्जल सिंगार रचि बैठे सेज,
 बिछौना रहे हैं खुलि मानों मन साधुरी ॥
 हास परिहास पगे लाल अति रहस की,
 कहे ते चितबे प्यारी नैनन के आधरी ॥
 राधिकारमण मनोहर उतर न देत,
 दुहुँन के मन भयौ आनन्द अगाध री ॥ ३१ ॥
 बिहरत बृन्दावन राधिका रमण सोहे,
 मोहें सहचरी साथ गाथ में बिपुन है ।
 बरनत मँजु कुँज बेली द्रुम अलि गुँज,
 कोइल चकोर मोर बन उपवन है ॥
 पुलिन सौं मिलौ राधा नायक किरण देखि,
 अलंकार उत्प्रेक्षा उपमा में पनु है ।
 शोभा कहि सकै कौन तातें धरि रहै मौन,
 आनन्द कौ भौन जाने मनोहर मन है ॥ ३२ ॥

देखत स्वपन्न औ विपन्न कै सुहृद पन्न,
 कोउक तटस्थ पन्न प्रमदा समाज है ।
 प्रेम की कुटिल गति प्रणय बसौ हैं अति,
 हियै मान मडराइ कीनों कछु काज है ॥
 चली है सबन आँड़ि राधिका तिन के पाछे,
 रमण विमन संका उपजी त्यों लाज है ।
 निपट अधीन हीन देखि मुसकानी प्यारी,
 मनोहर प्राण पाए रह्यौ रस आज है ॥ ३३ ॥
 आगे हैं भरौसौ बाँधि राधिका रमण लाल,
 गहि लए हाथ साथ चले शोभा पाये हैं ।
 रस रिस भरी भोंहें लोइन चपल सोहें,
 वचन बिलास गाँस हास उपजाये हैं ॥
 गरवाहीं गवन की माधुरी मनोहरन,
 बातें सुनि सुनि कोऊ दोऊ मन भाए हैं ।
 छवि की तरंग रंग अंग अंग छाड़ रही,
 कही न परत रस रस ही रिझाए हैं ॥ ३४ ॥
 विपिन बिहार बस राधिका रमण रंग,
 रंग के कुसुम साखा ऊँचे ते उठाए हैं ।
 सुमन बिछोंना मधि लाड़िली सुधारि केस,
 रच्यौ है सुवेष फूल आभूषण भाए हैं ॥
 प्यारी अपने सुरंग कर में किशोर जोर,
 चित्र से सवाँरि साज पुहुप बनाए हैं ।
 निरखि मनोहरन बाम कनक वरन,
 मुख चंद शोभा अमी नैन मन छाए हैं ॥ ३५ ॥

माधुरी निकुँज पुँज पुँजन मधुप गुँज,
 पिक की कुहुक नाना रंग पंछी भूजे हैं ।
 ता मधि सुगंधि अति कोमल कुसुम दल,
 सेजहि सँवारि त्यों मन ही मन फूले हैं ॥
 दोऊ रस सागर परम सुधराई सीउ,
 वचन बिलास भेद उभै अनुकूले हैं ।
 राधिकारमण धाम अंग अंग अभिराम,
 मनोहर गौर स्याम सोभा समतूले हैं ॥ ३६ ॥
 राधिकारमन नाम कीनें हैं सफल आज,
 छाडिकै समाज प्यारी सङ्ग रंग भीने हैं ।
 चातुरी परम रस माधुरी महामनोज,
 निरखि निरखि प्राण बारि बारि दीने हैं ।
 उभै रस सार सिंधु उमगि खुलि मिलाप,
 प्रेम के प्रताप जोर दोऊ ओर कीनें हैं ।
 मनोहरताकी रासि कुटिल कटाच्छ हास,
 भोंहनि बिलास सोभा संपति कों छीने हैं ॥ ३७ ॥
 राधिकारमण महा नागर सिरोरतन,
 करत विलास रास समाधान चाहिये ।
 एक मतौ होइ सोई कीजियै जुगति तामें,
 प्रमदा अनेक बाते कासौं कासौं कहिये ॥
 एतक बिचार लाल तमाल विपिन मांझ,
 ढरि रहे निकट दरस प्यारी लहियै ।
 दुहुँन की गति देखि भई है चकित मति,
 मनोहर कौन भाँति प्रेम गली गहियै ॥ ३८ ॥

याही बीच और ब्रज सुंदरी सबनु राधा-
 रमण फिरत ढूँढि मति भई बावरी।
 जिते बृक्ष बेलि मृग मृगी अवनि बिहंग,
 पूछत कितहूँ देखी मूरति सु साँवरी ॥
 ऊतर न कहूँ पाइ तनमई भई लीला,
 प्रिय अनुकरन करत बाढी भावरी।
 मनोहर ढिंग गही चरन चिन्ह पाछे प्रिया,
 सहित सुहाग देखि आइ गई तांवरी ॥३६॥
 पाछे विरहिनि राधा विवस रमण खेद,
 प्रेम की प्रबलताई देखे हियौ करषै।
 प्यारी सुथराई लखि सवन की सुधि गई,
 थरहर करै सीउ नेंना मूँदे बरषै ॥
 सिगरी तरुणि मिलि लाड़िली जू थाह्य थाह्य,
 ठौर ठौर अवलोकै अंतर अमरषै।
 आगे अँधियारि जोर निरखि मनोहरन,
 चाँदिनी में बैठी जाइ गाढी बाढ़ी तरषै ॥३७॥
 सबै इक सार मन व्याप्यो है विरह तन,
 मिलि गुन गावें सब ध्यावें मुख चंद कौं।
 सोरठा की जी ला तान करषत प्रिय प्राण,
 नेक हूँ न समाधान आवै ब्रज चंद कौं ॥
 औवक उदित बीच राधिका रमण सिंच,
 सुधासार नीच ऊँच मेटी मेंड बंद कौं ॥
 जीउ आएँ जैसी देह श्रीषम बरषा मेह,
 मनोहर नेह को छुड़ाइ सकै फंद कौं ॥३८॥

राधिकारमण ब्रज सुन्दरी सहित बन,
 बिहरत नृत्य नाना भाँति कौतूहल में।
 दोऊ तन एक जीउ मेलि भुज ग्रीउ ग्रीउ,
 नागरता सीव प्रगटी है प्रेम बल में ॥
 बिबिध प्रबंध गाँन उदित उपज तान,
 सुघराई मान अंग परसत पल में।
 नैनन में रीझ दान भेद भरी मुसकान,
 देखिबे की बानि मनोहर भाग फल में ॥ ४२ ॥
 कुसुमनि रहे मैलि मनोहर वृक्ष बेलि,
 हसन सुगंधि रेल पवन हलत हैं।
 चांदनी रही है खिलि राधिकारमण मिलि,
 देखौ बलि चलि नैना चहूँ घाँ चलत हैं ॥
 सोभित बिहार बन फूलन के आभरन,
 गौर स्याम तन छल बल सौं ललत हैं।
 अधर अरुणताई वातन में चतुराई,
 सेंना बेंनी सुघराई प्राणन पलत हैं ॥ ४३ ॥
 बृंदावन फूले भूले कोइल भँवर मोर,
 चातक चकोर कोलाहलनि मचाए हैं।
 राधिकारमण बिहरन मंद मंद गति,
 नख सिख मिलिबे कूँ चाय चरचाए हैं ॥
 जाइ देखें सोइ मनोहर प्यारी अनुकूल,
 बाँधि कें प्रबंध सुख सार रस चाए हैं।
 हँसि हँसि हाथनि सों हाथ जोरें मुख मोरें,
 नैन सों जुरत नैन नैनन नचाए हैं ॥ ४४ ॥

आगे पाछे ललिता विशाखा बीच प्यारों पीड़,
 अंस भुज मेलि माते गज लौं ढरत हैं।
 चहूँ और सखिन समाज थांभि थांभि चले,
 राखि न सकत मन भाँव तो मुरत हैं ॥
 प्रिया कौ वदन हेरि उपमा कौं बारि बारि,
 प्रीतम निहाल नैना नैन सों जुरत हैं।
 राधिकारमण बन बिहरन देखि देखि,
 मनोहर मन जाने मूरति सुरति हैं ॥ ४५ ॥
 चहूँ और सखिन के पुँज फूली कुँज कुँज,
 राधिकारमण धीरें धीरें बिरहत हैं।
 मणिहूँ तें पानिप सुगंधि कुसुमनि लै लै,
 प्यारी अंग आभरण रचना करत हैं।
 श्रुति फूल पहिराइ हेरि रीझ बलि बलि,
 कहत कहत लाल अखियाँ भरत हैं।
 लाजन कै काज घूँघट की ओट करै तब,
 मनोहर हा हा खाइ पाइन परत हैं ॥ ४६ ॥
 यमुना के पास रास मंडल फटिक मणि,
 जटित मुकत माथें काछिनी सुधारिकैं।
 लेत हैं बिकटगति उघट रह्यौ है छाड़,
 तैसौई मृदंग यंत्र सुर मणि खारि कै।
 रहस बहस राधारमण रिभावन कों,
 एक तें सरस एक परन संभारि कै।
 छाँके थाके मनोहर सुघर समाज आज,
 फेर फेर देत प्राण मानस में बारि कै ॥ ४७ ॥

लाल लै मृदङ्ग रङ्ग भरे रास मण्डल में,
 लेत हैं दुरुह ताल रिभवत भामिनी ।
 नृत्यन लडैती गावैं ललितादि भूमि भूमि,
 उघटत कोऊ कोऊ दरसन कामिनी ॥
 यंत्रन के सुरन सौं सबन मिलाइ सुर,
 उठत तरङ्ग तान मन अभिरामिनी ।
 राधिकारमण रीभ भूषण उतारि देत,
 देत बकसीस रीभ मनोहर स्वामिनी ॥ ४८ ॥

॥ हेमन्त विहार वर्णन ॥

सरद के उपरान्त हेमन्त रह्यौ है बनि,
 दुत ही दुलाई जरवक्त हू सुहाये हैं ।
 जटित मुकट पाग जरकसी काहू समें,
 पाम रीथि रमा चित्र दोऊ मन भाये हैं ॥
 मखमल खचित बिबिध नग पगन में,
 मगन बन बिहार बतरस लाये हैं ।
 राधिकारमन मनोहर बिबि बेन देखि,
 शोभा के सरस ऐन नैनन में छाये हैं ॥ ४९ ॥

॥ अथ सिसिर विहार वर्णनम् ॥

बासर में रविकांत मणि कौ भवन भावै,
 जटित कवाई आभूषण भाँति भाँति के ।
 रैन माह मणिक के मन्दिर बयारि रोकि,
 बार ने अँगीठी सोहे उपरेंना गात के ॥
 रजाई निहाली और रेसमी पसमीबाब,
 बरनों कहाँलों सुर बानों मिही जात के ।
 हैम रितु राधिकारमण मनोहर देखि,
 एक तें सरस एक बानिक सुहात के ॥ ५० ॥

आगम बसंत रसबंत प्रिय परिजन,
 बन उपवन सोभा सम्पति सौं छाये हैं ।
 स्वकर कुसुम जल छिरकी पराग बुका,
 चन्दन कपूर लै गुलाल लपटाए हैं ॥
 अरस परस राधारमण सुमन गेद,
 सखिन समाज खुल खेल त्यों मचाए हैं ॥
 नैनन नचाइ भोंह भेद सतराइ प्यारी,
 कन्दुक चलावै मनोहरन बचाए हैं ॥१५॥
 केसरी सुथरी पाग सिरी साफ भीनो भँगा,
 हरी धारी सूथन पटुका सेत पहरें ।
 थोरे थोरे भूषन गुलाल फेंट भरि भरि,
 पिचकारी हाथ साथ रंग भरे गहरें ॥
 गावै गारी चपल खिलार अभिनय करें,
 उमड़े सयूथ प्यारी सिंधु की सी लहरें ।
 दामिनी सी कोंधनि भरनि राधारमण कों,
 मनोहर आवनि उलटि करें कहें ॥१६॥
 सारी तन सुख सनी कंचन किनारी बनी,
 बांधी कसि तनी अंगी सेत बूँटी हरी है ।
 अंग अंग सुरसाल जगमग नग लाल,
 फेंटनि गुलाल चौप चतुराई भरी हैं ॥
 पिय पै रमकैं जोर मांडन बदन रोर,
 खरी भकभोर आँखि आँजिवेकैं अड़ी हैं ।
 राधिकारमन यातें करें भजिवे की घातें,
 मनोहर बातें सुनिवे की बानि परी हैं ॥१७॥

खेलत धमारि वृंदावन बनै पिया पीउ,
 जीउ की छपाई बातें प्रगट करत ह ।
 बाँटि लीनों सखी सौं जगाबत अनूठे चोज,
 उपज मनोज हासी हिय कौं हरत हैं ।
 सैन दै भूमकि दौर सबन मचाई रौर,
 धूँधरी गुलाल कगि सोधे सौ भरत हैं ।
 राधिकारमण कितौ यतन बनावै तऊ,
 श्यामा भावै करै मनोहरन टरत हैं ॥ ६० ॥
 सबन के हाथ पिचकारी भारी उतावल,
 छबि सौं सुगंधि खेंचि डारै चहूँ ओर तें ।
 भीजे अंग अंग सोहैं माहन मदन मोहैं,
 फरकत भौहैं बेंन नैनन की कौर तें ।
 बोलनि हँसनि चोज मन के मथन मौज,
 कथन न मानें कोऊ दोऊ दिसा रोर तें ॥
 राधिकारमन चक्राकृति फिरें मनोहर,
 रंगनि भरन बचावनि ठौर ठौर तें ॥ ६१ ॥
 दुहूँ दिसा खेल बन्यौं दुहूँ न भगरौ ठान्यौं,
 काहू को न मान्यौं कोऊ चौप भरि भरि कै ।
 बाढ़ी पिचकारी मार छुटे केस टूटे हार,
 देह की संभारि नाहीं माहीं रहे अरि कै ।
 दौरी सबै सैन दिये गहें चक्रचौध किये,
 राधिकारमण जीयें हियें भरि धरि कै ।
 अरगजा सीस ढारे मनोहर नेह चोरें,
 कौन श्याम गोरें भोरें भायौ परिकर कै ॥ ६२ ॥

खेलन में आड़े हाथ लीनें है दपति दौरि,
 राधिकारमण गाढें गहे नहीं छोरहीं ।
 प्रिया हसिं बाँयें हाथ घूँघट कों पटतारि,
 दाहिनें चिबुक गहि नैन सैन जोरहीं ।
 बार कों सबारि हेरि चोटी गुहि पाटी पारि,
 लहंगा अगीया सारि लखि मुख मोरहीं ।
 आँखि आँजिबे की बार बहुत संभार करें,
 लोइन मनोहर छबि सों चित चोरहीं ॥ ६३ ॥
 दोऊ सेत बागे बनें होरी खेल सुख सनें,
 काहू कों न कोऊ गनें घनें रंग रचे हैं ।
 कर पिचकारी धरै रंगनि उमगि भरें,
 उर मोती माल रुरें जरे नैन नाचे हैं ॥
 चोख की रंगीली यातें करत अनूठी घातें,
 प्रेम रस माते बातें कोक कला बाचे हैं ।
 राधिकारमण देखें मनोहर अनिमेषों,
 जनम सफल लेखें सोभा सिंधु सांचे हैं ॥ ६४ ॥
 तिखने अटारी जारी रंघन मलय चारि,
 पवन पराग लै लै खेलत धमार हैं ।
 जटित पलंग पर गुलाबी बिछोंना फबि,
 छबि मद माते नैन बेनन खुमार हैं ।
 हाव भाव भोंहें तिरछोंहें मोहें मोहें लेत,
 करत कटाछें आछें लागत समार है,
 मनोहर गौर श्याम राधिकारमण नाम,
 कीरति कुंवरि ब्रजराज कौ कुमार है ॥ ६५ ॥

लता सों लपटीकुंज कुसुमनि पुंज पुंज,
 अलि बृन्द गुंज पिक पंचम कहत हैं ।
 सीतल सुगंध अति दक्षिण पवन मन्द,
 उपज आनन्द जाल रंधन बहत हैं ॥
 रगमगौ रितुराज फूलसों बिछौंना साज,
 मत्त भए आज रस राज कौ लहत हैं ।
 राधिकारमण रंग मनोहर अंग अंग,
 छवि की तरंग न्याय नैन न गहत हैं ॥ ६६ ॥
 पंच रंग कोमल सुगंधि कुसुमनि गूँथि,
 चमकायौ डोल डोरी खँभ रचि पचि कै ।
 नख सिख फूलनि के आभूषन लटकाइ,
 राधिकारमण मिल बैठे सोभा सचि कै ।
 झुलाबति ललिता विशाखा मंद मंद सुर,
 गावैं सुघराई बीच तानन सों सचि कै ।
 मनोहर गौर स्थाम केसी उपकंठ धाम,
 आनन्द उदधि संग रंग रह्यौ मचि कै ॥ ६७ ॥
 ॥ अथ ग्रीष्म विहार वर्णन ॥
 इंद्रनीलमणि श्याम सुन्दर निदाघरितु,
 थोरे थोरे भूषण मुकता माल पहरे ।
 भीनी धोती सेत पै किनारी लाल उपरेना,
 पीरे मोहिं अंग अंग भलकनि लहरें ।
 तिलक बनाइ भाल बाहु वक्ष कक्ष खौर,
 केसरी पगिया मोर चँदा ब्यार फहरें ।
 राधिकारमण प्रिया मिल बैठे तहखानें,
 मनोहर नैन शोभा सिंधु पैठे गहरें ॥ ६८ ॥

चादर जल की चारों ओर छुटें उपरतें,
 नीचे जल जंत्र ढिग ढिग सोभा देत है ।
 बीच परिजंक-मणि जटित कुसुम सेज,
 फुहीकन लागत सुहाई मुख लेत हैं ।
 राधिकारमण मिलि मलयज वागे बनें,
 बैठे हास परिहास रस महा हेत हैं ।
 मनोहर बीजन मधुर तें न ज नी जात,
 पावस निदाघ किधों सीत के निकेत हैं ॥ ६६ ॥
 मन्दिर मणिन बहु बितत अनेक द्वार,
 खँभ चहूँ ओर जल छूटत न लच्छ हैं ।
 बीच में उसीर कुंज ऊँचीबौरी उपरते,
 अनुच्छिन यंत्र छिरकाउ तोय स्वच्छ हैं ॥
 सीतल सुगन्ध मन्द भरौखाँ भमक पवन,
 राधिका रमण सेज कुसुमित कक्ष हैं ।
 ग्रीष्म विहार बातें मनोहर देखें सुनें,
 जानत है रोम रोम श्रवण कि चक्षु हैं ॥ ७० ॥
 केसरी खिरकी पाग भूमिका बिसद बनी,
 भीनों भँगा वूँटा संत मोती श्रुति सोहनें ।
 वक्ष के बसन अरगजा लाए चोबा कक्ष,
 नख सिख छिरकि गुलाब जल जोंहनें ॥
 सुमी की सूथन पग नूपुर मुक्त माल,
 लाल करै बाल ख्याल मनोहर मोहनें ।
 राधिका-रमण जल जंत्र के भवन ठाढ़े,
 मलय पवन सेवा साधें पर्यौ गोंहनें ॥ ७१ ॥

तन सुख सारी में किनारी जग मग जोति,
 अतरौटा अतलस नील पीत धारी हैं ।
 सोधें सनी आंगी मिहीं हरी कोर कसि बांधी,
 राधिका रमण मन गज बंध बारी हैं ॥
 चोटी बेना आड़ नासा मोती औ चिबुक बेदी,
 अञ्जन विशाल नैन त्यों कटाच्छ कारी हैं ।
 तपरितु थोरे थोरे भूषन पहिर प्यारी,
 जलजंत्र मेह मनोहर चहचारी है ॥ ७२ ॥
 बैठे हैं उसीर कुंज राधिका रमण संग,
 कंचन किनारी सारी डोरिया सरस है ।
 अरगजा खौर जाली सोसनी अंगिया मिहीं,
 अतरौटा सूती अति कोमल परस है ॥
 दसौं दिसा नीर अनगिनि तें फुहारे छूटें,
 फूल कौ विछौंना ब्यार रस कौ बरस है ।
 थोरें थोरें भूषण मनोहर जलज मणि,
 ग्रीष्म बिहार शोभा सागर दरस है ॥ ७३ ॥
 जल जंत्र गेह मांह फूल की तिवारी फवी,
 कुसुमित सेज प्रिया पीउ सुख देनी हैं ।
 दोऊ चरचार पगे नयौ नेह रगमगे,
 हँसन तरंग रुरे मोतीमाल बेणि हैं ॥
 छिनु छिनु नई रीत जीतें हारें हारें जीतें,
 मेटी मेह नैनन कटाछें कोर पैनी हैं ॥
 राधिका रमण रीझ मनोहर रहे भीज,
 छूटत लपट भुकि आवैं अलि सैनी हैं ॥ ७४ ॥

फूल कौ बंगला परिजंक बन्यौ छूटे नल,
 तिरछोहें दोऊ दिसा मानौ जल छए हैं ।
 अंग अंग भूषन बनाउ नील पीत छबि,
 फबि रही नैनन निवास नित लए हैं ॥
 अरस परस स्वाद सरस कपूर पान,
 दरस परस सरस महामत्त भए हैं ।
 राधिका रमण प्रेम राचे नील मणि हेम,
 देखें मनोहर तन मन बारि दए हैं ॥ ७५ ॥

कंचन कलित नील रतन तिवारी बन्यौ,
 भरोखानि पवन गतागति की खानि हैं ।
 चादर फुहारे जल छाड़ रहे चारौ ओर,
 राधिका रमण निसि जागे श्रम मानि हैं ॥
 सुमन सुगंध लै संवारयौ वर परिजंक,
 मन्दिर मनोहर विचित्रता की खानि है ।
 पौढ़े दोऊ नागर सुथरौ उपरैना तानि,
 मंद मंद हँसनि निभृत बतरानि हैं ॥ ७६ ॥

पटा मणि फटिक में किधौ इन्द्रनील मणि,
 कंचन जराव जग मग शोभा लहरें ।
 किधौ सुरसरिता सौ भानुजा मिलाप विधि,
 सुता कौ निरखि अनिमेख न्हाव गहरें ॥
 जसके सहित किधौ उज्ज्वल सरस रस,
 अनुराग मिले मानौ नील पीत पहरें ।
 राधिकारमण दोऊ कुसुमित सेज सोए,
 छवि की भकोर नैन मनोहर ठहरें ॥ ७७ ॥

ललिता बजाई बीन सुघराई तान सुनि,
 उठि बैठे सेज दोऊ केऊ सोभा पावही ।
 भुजनि उचाइ अगराइ मृदु मुसकाइ,
 हेरनि सिंगार में नें मन भावही ॥
 आरसी अगूँठी मुख निरखि सुधारिबे कौं,
 देहि न चपल कर छवि सौं बचावही ।
 राधिकारमण रंग फबि रहे अंग अंग,
 मनोहर नख सिख आनंद न मावहीं ॥ ७८ ॥
 मिसरी सवारि जल सीतल में डारि मिर्च,
 चूरिकें सुधारि दै मिलाइ महा हेत हैं ।
 कनक कटोरा भरि अतर कपूर करि,
 प्रिय सहचरि हाथ छकि भुकि हेत हैं ।
 राधिका रमण सोइ खस के भवन मोरि,
 अंग उत्थापन तृषा रस के निकेत हैं ।
 मनोहर बार बार सुर के अधर धार,
 पानक पीवत पंचेन्द्रिय सुख लेत हैं ॥ ७९ ॥
 धोती सेत पहरी बिहार जल प्रिया पीउ,
 सखी चारों ओर बाढ्यौ कौतुक विशेष है ।
 कबहूँ लडैती आप कभू परिजन मिलि,
 राधिका रमण घन करें अभिषेक हैं ॥
 प्रीतम हवासी जल डारें आस दियें कियें,
 परम उछाह एक तें सरस एक हैं ।
 पाछें एक बार मनोहरन बरषा लाइ,
 सबन रिभावैं बार बार यहै टेक हैं ॥ ८० ॥

उठे जल केलि तें अंगौछि अंग सौधौ सन्यौ,
 सेत बागौ भूषन जलज मणि कीनें हैं ।
 राधिकारमण मिलि बैठे नग चौतरी में,
 बन जोग भोजन सखी लै आगैं दीनें हैं ।
 पानक कपूर मिश्री मेवा औ सरदा आदि,
 अनन्नास विविध मिठाई स्वाद लीने हैं ।
 खीरा तरबूज आम कटहल दही मठा,
 सिखरनी दूध मनोहर चन्द भीने हैं ॥ ८१ ॥
 यमुना के तीर धीर मलय समीर दुरै,
 लटकि कदम्ब साखा नीर परसत हैं ।
 नीलमणि हीरनि जटित कल मण्डल में,
 राधिकारमण कैसे नीके दरसत हैं ।
 केसर कपूर मेल विविध सुगन्ध रेल,
 चंदन चरचि बागे सोभा सरसत हैं ।
 कंचन कलित स्वच्छ पगिया कनक गुच्छ,
 मनोहर चन्द्रिका में रंग बरसत हैं ॥ ८२ ॥
 अतसी कुसुम स्याम सुठौनता विश्राम,
 उज्जल सरस धाम बर तरुनई है ।
 नैन रतनारे तारे कारे अनियारे भारे,
 कर औ चरण अधरन अरुनई है ।
 दीरघ कुटिल बार भोहैं अलका लिलार,
 बरुनी सुठार किधौं काम बेलि बई है ।
 वल्ल बाहु द्वै बिसाल राधिकारमण लाल,
 मनोहर बाल रीझ अपनाइ लई है ॥ ८३ ॥

चंदन अगर गारि केसर कपूर डारि,
 मृगमद सौ सुधारि अतर मिलायौ है ।
 सरस सुगंधि घोर राधिकारमण खोर,
 मरवट जोर जिय चाइ चर चायौ है ।
 भीनी धोती पाग सेत उज्जल अधिक खेत,
 बंटी सोभा देत हरि टोंरा लटकायौ है ।
 मनोहर देखें बनें धीजै कौन कहें सुनें,
 भाग फले लुनें जाकौ मन अटकायौ है ॥ ८४ ॥
 सेत भूमि पर सुनें हरी पाग मोर चन्दा,
 कुण्डल कनोंती अलबेली सी रगमगै ।
 मुरली दुलरी धुक धुकी पीत जाली भँगा,
 पगा चित्र स्याम अंग खरौई जग मगै ॥
 कंचन कुसुम मोती गूँज माल लाल-हिये,
 छुदावली पट्टचियाँ बाजूबन्द सों ठगै ।
 सूथन सुरंग राधारमण चमक चूरौ,
 नूपुर पहिरि मनोहर नैन में लगें ॥ ८५ ॥
 नील भूमिका पै पाग मनोहर केसरी में,
 जराव कौ सिर पेच मोर चन्द्रिका दियें ।
 दाहिनें कनक गुच्छ लटकनि पर स्वच्छ,
 भगा बूँटेदार पगा सूथन समें कियें ॥
 कुण्डल किरीट करे मोती माल बाजूबन्द,
 नूपुर जंगौली जगमग श्यामता दियें ।
 राधिकारमण लाल सोभित सिंगारी प्यारी,
 करत अलाप चारी सुख मुरली लियें ॥ ८६ ॥

जाली कौ जंगाली रंग भगा स्याम सिंधु अंग,
 छबि की तरंग भक भोरी भांत भांत में ।
 बांध्यौ सुनहरी चीरा थिरकाइ हार हीरा,
 देखें कौन धीरा मन राखै निज हाथ में ॥
 सूथन सबुज धारी सोभा अतलस प्यारी,
 नूपुर सुरन बारी मनोहर बात में ।
 राधिकारमण मुख अम्बुज दवन खोलें,
 राग कौ भवन सुर मुरली की घात में ॥ ८७ ॥
 नील कला निधि किधौ भूतल अभूत देखि,
 पूज्यौ मेंन सरस सुमन शोभा बाग सौं ।
 स्याम रस सागर कौ सार लै विचित्र बिधि,
 मूरति सँवारि किधौ चीते अनुराग सौं ॥
 किधौ नव नागरी के पूंजी भूत मनोरथ,
 उलहि उलहि रंग सनेहैं सुहाग सौं ।
 राधिका रमण मिहीं तनियां लपेटि फेंटा,
 औचका भई है भेटा मनोहर भाग सौं ॥ ८८ ॥

❀ अथ छप्पै ❀

भलमलात तन स्याम सीस फेंटा फबि बांधें ।
 भ्रूयुग काम कमान नैन पैने सरसांधें ॥
 सुन्दर बदन बिलास बक्ष लक्षण दृग गोंहन ।
 ललित चपल भुज पीन छीन कटि तनियां मोहन ॥
 जानु जंघ घटना सरस, चरण अरुण नखचन्द रबि ।
 मनोहरन बरनन करैं कैसें राधारमण छबि ॥ ८९ ॥

बाँध्यौ सिर फेंटा मिहीं ऐंठवा अमैठ करि,
छोर उकसाइ छैलतासौं रहे सनि कै ॥

तैसोई तनिथां तानी तनी अटकाइ कछु,
पाछें उरसी है फन आगें रह्यौ बनि कै ॥

कुण्डल कनौनी आभा सोभा मुख मंडल की,
पीरी उपरैना लटकायौ ठाठ ठनि कै ।

राधिकारमण फबि छबि की गहरता सौं,
मनोहर भांत पाव धारें गनि गनि कै ॥ ६० ॥

अरुण चरण जानु जंघ की सुठौनताई,
सुथरौ तनिया छीन कटि कसि बाँध्यौ है ।

सोभित नितंब उर अंस उभकनि देखि,
मदन कमान भोंह नैन सर सांध्यौ है ॥

ऐंठौ फेंटा सीस ससि बदन सुधा कौ जीभ,
सुधारें लटूरी नाग छौना आड फांदयौ है ।

राधिकारमण ग्रीवां भुजनि दुराइ हँसि,
बचन रचन मनोहर मन्त्र नाध्यौ है ॥ ६१ ॥

वर्षां बिहार वर्णनम् ।—

केसर सौं रंगी तन सुख धोती बनि रही,
मिहीं उपरैना रंग गुलाबी चमुक है ।

बाँधी है कसुंभी पाग कलंगी कनक गुच्छ,
मध्य मोर चन्दा पौन परसि रमक है ॥

चातृक चकोर मोर कोकिला की कुहकनि,
पुहपनि मधुपन पुंज के भ्रमक है ।

पावस में राधिकारमण थोरे भूषण सों,
मोहत मनोहरन अङ्ग की दमक है ॥ ६२ ॥

सुथरी कसूँभी सारी कंचन किनारी फवि,
 अतरौटा सेत नील धारी अतलस है ।
 चूँनरी में बूँटी बाँध नूँ की मिही अंग अंग,
 छवि कौ तरंग सुख सागर दरस है ॥
 आभूषण बनें थोरे सोभित हैं जात गोरे,
 भौंह की मरोरै नेंना नाचत सरस हैं ।
 पावस में राधिकारमण सोभा देखि देखि,
 बारत मनोहरन प्राण सरबस हैं ॥ ६३ ॥
 श्याम घटा भूमि भूमि परसत दामिनि की,
 दमकनि चहुँ ओर पौन पुरवाई है ।
 राधिका-रमण बन बिहरन रंग रचे,
 मिही मिही फूही अति लागत सुहाई है ॥
 बृंदावन वृत्त बेलि रही हरियाली भेलि,
 कोकिल पपीहा बेन मेंन की दुहाई है ।
 कुसुम विकास गाव अलि बृंद और पास,
 नृतत मयूर मनोहर सुख दाई है ॥ ९४ ॥
 बांहां जोटी राधिका-रमण बन बिहरन,
 बोलनि हँसनि रीझ सुख कौ समाज है ।
 लटक लटक जात ठठकि ठठकि रहे,
 अटक अटक मौज मेंन सिर ताज है ॥
 बादर आल्हरियाँ भूमि महामत्त घूमि घूमि,
 डारत फुहारें मानों फुही गज राज है ।
 कौंध चौंध दामिनि की मनोहर स्वामिनीकी,
 नई रीत रामिनि की शोभा फवी आज है ॥ ६५ ॥

मलयज खंभन में कंचन जटित मोती,
 भालरि मयारि डांडी मरुवे सुवन हैं ।
 तैसौई हिंडोरो बनि ठनि बैठे प्रिया पीउ,
 तकिया लगाइ एक प्राण दोऊ तन हैं ॥

भुलवत आगे पाछे द्वै द्वै सखी गावैं गीत,
 सबै मिल जील सुर गरजत घन हैं ।
 ऊंचे चित्र चंद्रातप भिम भिम बरषा में,
 मनोहर सुख लेत राधिकारमण हैं ॥ १०८ ॥

प्रेम कै हिंडोरे बलि भूलत हैं प्रिया पीउ,
 नील पीत बागे बने सोभा उछरत है ।
 बोलनि हँसनि गान एक रस रमक तान,
 मान सौं रमकि भोटा स्वासन भरत हैं ॥

भोंह की मगोर में अन्नंग अंग पावैं कोर,
 बोरि बोरि रंग अंग अंगनि धरत हैं ।
 राधिकारमण भारि मनोहर चह चारी,
 लोइन चतुर चारि खंजन लरत हैं ॥ १०९ ॥

पंच खन उपर रंगीली चित्र सारी बनी,
 चहूँ ओर जालरंध्र पवन गवन है ।
 बरसत घोर घोर दामिनी थरहरानि,
 मंद मंद गरजनि सुख के भवन हैं ॥

भणि के प्रदीप स्वेत सज्या महा मृदुता में,
 बिलसत प्रिया पीउ उपमा कवन है ।
 मनोहर बीरा रस बिबि मुख चंद लसैं,
 बोलति खुलनि हसे राधिका रमन है ॥ ११० ॥

वरणें उमड़ि मेह देह की संभार नाहिं,
 मोहें अति आनंद की गोभा हुलसत है ।
 मणि की अटारी जारी रंघन पवन भारी,
 पलका पै राधिकारमण बिलसत हैं ॥
 सिंजित मनित खानि भनित थरहरानि,
 भोंह की विचित्र बानि तानि दरसत है ।
 नैन की चपलताई खंजरीट की लराई,
 मनोहर सुघराई रंग बरसत है ॥ १११ ॥
 राधिकारमण रस सागर सरस सत,
 पढ़त दिबस रेंनि चैन नाहीं मन में ।
 मेवन की अभिलाष राखत छिन ही छिन,
 बिन दरसन तलफत बृंदावन में ॥
 ऐसौ बडभागी पै करत कृपा अभिमत,
 निरखै युगल हित पुलकित तन में ।
 मनोहर करै आस बास नित निकट में,
 रहै श्रीगोपालभट्ट जू के परिकर में ॥ ११२ ॥

अरिल्ल:-

संबत सतरह सै सतावन जानि के ।
 सावन बदि पंचमी महोत्सव मानि के ॥
 निरखि श्रीराधारमण लडैती लाल कौ ।
 हरि हाँ मनोहर संपूरन बनराज विचारचौ ग्याल कौ ॥ ११३ ॥
 इति श्री कविवर मनोहर जी कृत राधारमण रस सागर संपूर्ण ॥

❀ श्री नवगोविंद देवो जयति ❀

अथ गोपाल स्तवराज लिख्यते ।



नव नीरद घन स्याम धाम अभिराम बिहारी ।
नीलेंदीबर नैन बेन रस एन जु भारी ॥
गोपी सुत जुत ललित लील जग प्रगट अघट जस ।
बर अनूप रस भूपन महुँ गोपाल रूप अस ॥ १ ॥
रुचिर रचित सुचि चिकुर सीस घुंघरारे कारे ।
मोर पुच्छ की स्वच्छ लसन कबि बरनत हारे ॥
सुशम कुसम वर नीपजुक्त वनमाल बिराजे ।
कुंडल लोल अमोल कपोलनि अति छाबि छाजै ॥
मुक्ताहार उदार चारु उर लसत शुभग हृद ।
कंचन रचित किरीट सुसोभित नूपुर अंगद ॥
मन्द पवन बस विवस चारु चय चीर चलत भल ।
सधर अधर पुट न्यस्त बांसुरी रुचिर मधुर कल ॥
जिहँ रव सौँ आनंद कंद ब्रज नंद नंद सुत ।
बार बार गोपाल नारि चित करत मोह जुत ॥
वाला बदन सरोज सुधा रस पान करत अस ।
प्रेमी परम प्रवीन मनोहर मत्त भ्रमर जस ॥
तिन के मन रस विवस बहुरि जुत छोभ कराहीं ।
मृदु मुसिकनि जुत बंक विलोकनि में सचुपाहीं ॥
नव जीवन जुत अंग प्रेम रस रंग परसपर ।
भूषन सोभित गात बहुरि निरदूषन अंबर ॥

अस गोपिन मधि बसत कबहुँ इमल सत गुपाल ।
 उमडि धिरथौ घन घमडि सुजिम बिच दामिन जल ॥
 कबहुँ जमुन जल लील कब हुँ वर मित्रनि मांहीं ।
 जुद्ध केलि रस भेलि कराहीं अति सचु पाहीं ॥
 नंदलाल गोपाल हंरन दुख वर सुख कारी ।
 टेरहिं गाइनि कौं जु कबहुँ भरि चाइनि भारी ॥
 कंपित वृंदाबिपिन जमुन जल परस अनिल बल ।
 अमल कदम की विमल छांह जिह माह लसत भल ॥
 ता में नव गोविन्द चंद नव नागर नगधर ।
 लसत कबहुँ सुख साज सुखद ब्रजराज कुंवरवर ॥
 रतन जटिन गिर निकट प्रगट रत्नासन मांही ।
 कंचन मंडप माहिं कबहुँ जँहँ सुर द्रुम छाहीं ॥
 गिर गोवर्द्धन माहिं जहां निसि द्यौस अमित सुख ।
 सुसम बसंती कुसुम सरस सत करत दिसा मुख ॥
 ता में कबहुँ कसत लसत हिय अति सचु पावत ।
 रास रसोत्सुक रसिक रंगीलौ रस बरसावत ॥
 कबहुँ छत्र सम वाम हाथनग नग धर धरि अति ।
 दूरि किये जल धार कूर मति प्रेरित सुरपति ॥
 ललित बेंन मुख गलित नाद सुनि वर हुंकार करि ।
 वत्स सहित हित चाय नैचिकी निरखि रहै हरि ॥
 हरि ही कौं करि गांन भ्रेम भरि राखत हिय कौं ।
 हरिलीला अनुकरन लेत सुख देत जु जिय कौं ॥
 दंड पास परकास सुजिन गोपन के हाथन ।
 अधिक सुसोभित कबहुँ जु नग धर तिनके साथन ॥
 नारदादि मुनि वृंद बेद बेदांग सार पार गत ।
 बचन रचन जुत प्रीति रीति जिहिं गान करहिं नित ॥

मलयज खंभन में कंचन जटित मोती,
 भालरि मयारि डांडी मरुवे सुवन हैं ।
 तैसौई हिंडोरो बनि ठनि बैठे प्रिया पीउ,
 तकिया लगाइ एक प्राण दोऊ तन हैं ॥

भुलवत आगे पाछे द्वै द्वै सखी गावैं गीत,
 सबै मिल जील सुर गरजत घन हैं ।
 ऊंचे चित्र चंद्रातप भिम भिम बरषा में,
 मनोहर सुख लेत राधिकारमण हैं ॥ १०८ ॥

प्रेम कै हिंडोरे बलि भूलत हैं प्रिया पीउ,
 नील पीत बागे बने सोभा उछरत है ।
 बोलनि हँसनि गान एक रस रमक तान,
 मान सौं रमकि भोटा स्वासन भरत हैं ॥

भोंह की मरोर में अनंग अंग पावैं कोर,
 बोरि बोरि रंग अंग अंगनि धरत हैं ।
 राधिकारमण भारि मनोहर चह चारी,
 लोइन चतुर चारि खंजन लरत हैं ॥ १०९ ॥

पंच खन उपर रंगीली चित्र सारी बनी,
 चहूँ ओर जालरंध्र पवन गवन है ।
 बरसत घोर घोर दामिनी थरहरानि,
 मंद मंद गरजनि सुख के भवन हैं ॥

मणि के प्रदीप स्वेत सज्या महा मृदुता में,
 बिलसत प्रिया पीउ उपमा कवन है ।
 मनोहर बीरा रस बिबि मुख चंद लसैं,
 बोलति खुलनि हसे राधिका रमन है ॥ ११० ॥

वरणें उमड़ि मेह देह की संभार नाहिं,
 मोहें अति आनंद की गोभा हुलसत है ।
 मणि की अटारी जारी रंघन पवन भारी,
 पलका पै राधिकारमण बिलसत है ॥
 सिंजित मनित खानि भनित थरहरानि,
 भोंह की विचित्र बानि तानि दरसत है ।
 नैन की चपलताई खंजरीट की लराई,
 मनोहर सुघराई रंग बरसत है ॥ १११ ॥

राधिकारमण रस सागर सरस सत,
 पढ़त दिबस रेंनि चेंन नाहीं मन में ।
 मेबन की अभिलाष राखत छिन ही छिन,
 बिन दरसन तलफत बृंदावन में ॥
 ऐसौ बडभागी पै करत कृपा अभिमत,
 निरखै युगल हित पुलकित तन में ।
 मनोहर करै आस बास नित निकट में,
 रहै श्रीगोपालभट्ट जू के परिकर में ॥ ११२ ॥

अरिल्ल:- -

संबत सतरह सै सतावन जानि के ।
 सावन बदि पंचमी महोत्सव मानि के ॥
 निरखि श्रीराधारमण लडैती लाल कौ ।
 हरि हाँ मनोहर संपूरन बनराज विचारचौ ग्याल कौ ॥ ११३ ॥
 इति श्री कविवर मनोहर जी कृत राधारमण रस सागर संपूर्ण ॥

❀ श्री नवगोविंद देवो जयति ❀

अथ गोपाल स्तवराज लिख्यते ।



नव नीरद घन स्याम धाम अभिराम बिहारी ।
नीलेंदीबर नैन बेंन रस एन जु भारी ॥
गोपी सुत जुत ललित लील जग प्रगट अघट जस ।
बर अनूप रस भूपन महुँ गोपाल रूप अस ॥ १ ॥
रुचिर रचित सुचि चिकुर सीस घुंघरारे कारे ।
मोर पुच्छ की स्वच्छ लसन कवि बरनत हारे ॥
सुशम कुसम वर नीपजुक्त वनमाल विराजे ।
कुंडल लोल अमोल कपोलनि अति छाबि छाजै ॥
मुक्ताहार उदार चारु उर लसत शुभग हृद ।
कंचन रचित किरीट सुसोभित नूपुर अंगद ॥
मन्द पवन बस विवस चारु चय चीर चलत भल ।
सधर अधर पुट न्यस्त बांसुरी रुचिर मधुर कल ॥
जिहँ रव सौँ आनंद कंद ब्रज नंद नंद सुत ।
बार बार गोपाल नारि चित करत मोह जुत ॥
वाला बदन सरोज सुधा रस पान करत अस ।
प्रेमी परम प्रवीन मनोहर मत्त भ्रमर जस ॥
तिन के मन रस विवस बहुरि जुत छोभ कराहीं ।
मृदु मुसिकनि जुत बंक विलोकनि में सचुपाहीं ॥
नव जीवन जुत अंग प्रेम रस रंग परसपर ।
भूषन सोभित गात बहुरि निरदूषन अंबर ॥

अस गोपिन मधि बसत कबहुँ इमल सत गुपाल ।
 उमड़ि धिरयौ घन घमडि सुजिम बिच दामिन जल ॥
 कबहुँ जमुन जल लील कब हुँ वर मित्रनि मांहीं ।
 जुद्ध केलि रस भेलि कराहीं अति सचु पाहीं ॥
 नंदलाल गोपाल हरन दुख वर सुख कागी ।
 टेरहिं गाइनि कौं जु कबहुँ भरि चाइनि भारी ॥
 कंपित वृंदादिपिन जमुन जल परस अनिल बल ।
 अमल कदम की विमल छांह जिह माह लसत भल ॥
 ता में नव गोविन्द चंद नव नागर नगधर ।
 लसत कबहुँ सुख साज सुखद ब्रजराज कुंवरवर ॥
 रतन जटिन गिर निकट प्रगट रत्नासन मांही ।
 कंचन मंडप माहिं कबहुँ जहँ सुर द्रुम छाहीं ॥
 गिर गोबर्द्धन माहिं जहां निसि द्यौस अमित सुख ।
 सुसम बसंती कुसुम सरस सत करत दिसा मुख ॥
 ता में कबहुँ कसत लसत हिय अति सचु पावत ।
 रास रसोत्सुक रसिक रंगीलौ रस बरसावत ॥
 कबहुँ छत्र सम वाम हाथनग नग धर धरि अति ।
 दूरि किये जल धार कूर मति प्रेरित सुरपति ॥
 ललित बेन मुख गलित नाद सुनि वर हुंकार करि ।
 वत्स सहित हित चाय नैचिकी निरखि रहै हरि ॥
 हरि ही कौं करि गांन प्रेम भरि गखत हिय कौं ।
 हरिलीला अनुकरन लेत सुख देत जु जिय कौं ॥
 दंड पास परकास सुजिन गोपन के हाथन ।
 अधिक सुसोभित कबहुँ जु नग धर तिनके साथन ॥
 नारदादि मुनि वृंद वेद वेदांग सार पार गत ।
 बचन रचन जुत प्रीति रीति जिहिं गान करहिं नित ॥

अथ तत्र सारी शुक की उक्ति प्रत्युक्ति वर्णनः —
 दापन अनारन में सारी शुक बहु तेरी,
 बातें करें चोख की सुनत प्रिया पीउ हैं ।
 सारी कहै बृंदावन ईश्वरी लडेंती तुम,
 जानौं खांन पान दैकैं राख्यौ जिन जीउ है ॥
 खाईये जिन कौ धन गाईये तिन कौ गुण,
 दचन प्रमान इहै आचरण सीउ है ।
 राधिका-रमण जस गावैं जिन के ह्वै बस,
 ताकौं गांऊ एहो सुक मनोहर हीउ है ॥ ९६ ॥
 कहैं सुक सुनौं सारी भूँठी सांचीं बहुतेरी,
 कहे की बिलगु नाहीं मानियें सुभाउ है ।
 बृंदावन चंद जू कौ बृंदावन कहियत,
 जानें सब सज्जनता कहूँ न दुभाउ है ॥
 रहौ जाके देस ताकौ जानौं न अपन ऐसी,
 कहौं जैसे महाविघ्न ऐसौई कुभाउ है ।
 राधिका-रमण नाम नीकै कै बिचारि देखौ,
 भावै अर्थ मनोहर याही में जु भाव है ॥ ९७ ॥
 आगे नाउ राधिकारमण ताके पाछे होत,
 देखौ जाके संग ते जगत जाने लाल कौ ।
 सदाई अधीन रहै भावै तिहैं सोई कहैं,
 परै जोई सहैं गहैं उनही के ख्यालकौ ॥
 देखे ते जियत जीउ अन देखे दहै हीय,
 पल पल करत सुधार बहै बाल कौ ।
 मनोहर नेन जाने देखे सुनी कौन माने,
 मन मुखी बातेबाने जान तन हाल कौ ॥ ९८ ॥

देखौ हरियारौ वृंदावन श्यामता की छवि,
 जहाँ तहाँ फैली अति लागत सुहाई है ।
 पंखी मृग वृक्ष बेलि यमुना कमल मेलि,
 चंवरीक इंद्रनील मणि दुति भाई है ॥
 और कहा कहूँ रस राज जाके अंग संग,
 ताकी पटनर अहो कहौ कौन पाई है ।
 राधिका-रमण याते मनोहर सबै भाते,
 ताकी बातें वेदनि नें नेति नेति गाई है ॥ ६६ ॥

गौर श्याम आभा मिलि हरयौ रंग होत यह,
 जाने जग याते सुख रोम रोम पावहीं ।
 गौर छवि जीति भांत लाडिली जू अंग दुति,
 द्वारा पोख्यौ जात यहै बुध जन गावहीं ॥
 जहां श्याम वृक्ष तहां पीत लता देखौ किनि,
 अरस परस शोभा सिंधु कौ बड़ावहीं ।
 राधिका-रमण अनुराग मिले श्याम रस,
 मनोहर हौंहि उभै कोकहि पढ़ावहीं ॥ १०० ॥

गिरिवर कर धरि राख्यौ जिन ब्रज जन,
 ताकौ गुन कासौ कहौ पटतर दीजियै ।
 जाने सुर नर मुनि वृंदावन रजधानी,
 श्री गोविंद अभिषेक सुनि सुनि जीजियै ॥
 सुंदर सुसील देखि मदन कौ मोह होत,
 परम उदोत कैसे सरवर कीजियै ।
 राधिका-रमण दृग थके देखे मनोहर,
 छवि की तरङ्ग नैन भरि भरि पीजियै ॥ १०१ ॥

छिन छिन गिरिराज धरन चकोर जीउ,
 ज्यावत बदन शशि सुधा मुसकानि है ।
 श्री गोविन्द अभिषेक आगें भयौ जानें हम,
 पाछें कछु भई सुधि महा सुख दानि है ॥
 वृन्दावन ईश्वरी के उमरा ही अभिषेक,
 त्रिजगत मांह रस रीत पहिचानि हैं ॥
 यातें राधाजू के आधीन अति रमण लाल,
 लोइन मनोहरन देखिबे की बानि है ॥ १०२ ॥
 जिन्हें कहौ बेद भेद भाषै तिन नेति नेति,
 तिन की कहूँ मैं कछु अद्भुत रीति है ।
 सोइ बानी सुनें जब प्यारीजू के बेंन तब,
 भूलत अपनी देह मनोहर मीत है ॥
 यातें अनुमान होत निगम बिचार सार,
 सफल भयौ प्रिया मैं प्रेम की प्रतीत है ।
 राधिकारमण जानें और की कही को मानें,
 परिजन सुख सानें सुधि की व्यतीत है ॥ १०३ ॥
 ॥ श्री भावनी तीज के कवित्त ॥
 हरियारी तीज में हिंडोरें वृषभान राय,
 रतन जटित कीनें सोभा सरसाने हैं ॥
 भूलत लड़ैती तापै आभूषन जगमग,
 सारी है कसुम्भी रंग अङ्ग दरसाने हैं ।
 चारों ओर भूले बनबारी न्यारी गोपन की,
 रमकि रमकि रोम रोम हरसाने हैं ॥
 राधिकारमण अनिमेष अवलोकि रहे,
 मनोहर छवि की अबधि बरसाने हैं ॥ १०४ ॥

सारी हैं सुरंग भीनी कञ्चन किनारी बनी,
 भालर जलज मणि फव्वौ मुखचन्द है ।
 चूनरी सुकेशी हरी बूँटी लाल भूमि पर,
 अतरौटा अतलस भवा नीबी बन्द है ॥
 रमकि रमकि भूलें भूषन भमकि भोटा,
 फहरात छोर मुसकानि मंद मंद है ।
 चकि रहे राधिकारमण देखि देखि छबि,
 मनोहर नैन ऐन मनसिज फंद है ॥ १०५ ॥

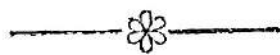
चारों ओर घोर घटा दामिनी लहलहानि,
 मंद मंद फुहीं पौन सीतल सुहाई है ।
 चढिके हिंडोरे दोऊ बहासि मचक देत,
 लचकि लचकि लंक आछी छबि पाई है ॥
 गावत मलार राग सरस उमै सुहाग,
 परसत अंग अंग रुचि उपजाई है ।
 राधिकारमण रोम रोम हुलसानि फबी,
 हँसि मुसकानि मनोहर सुखदाई है ॥ १०६ ॥

उँची अति नीप साखा भूलिबे की अभिलाषा,
 बांधी है विशाखा डोरी पंच रंग पाट की ।
 पटली जटित हीरा चढे दोऊ एक जीरा,
 सुनहरी चीरा सारी सुघराई घाट की ॥
 उमगि उमगि भूलें उमै अंग संग फूलें,
 अपनपौ भूलें रुचि नई नई ठाट की ।
 राधिकारमण शोभा मनोहर औरै ओभा,
 हिये उठै गोभा परिपाटी प्रेम बाट की ॥ १०७ ॥

इहि विधि जे चिंतवनि करत भक्ति युत देववर ।
 नित प्रत ही स्तुति करत दिवस निसि चाय भाय भरि ॥
 तिन कौ नव गोविंद चंद रस कंद सुनहु भल ।
 लेत तुरित अपनाय देत पुन वर वाञ्छित फल ॥
 मानि मानि सनमान तिन्है नित राज सभा महिं ।
 जगजन के प्रिय जानि होय अपमान कबहुँ नहिं ॥
 तिन भक्तनि में बसै चंचला लसै अचल अनि ।
 वावदूक रसवंत अंत पुन लहै परमगति ॥
 संतनि की सिख पाय सुरिष गौतम के पायन ।
 करि प्रकाश नति रास भाय भरि ढरि वर चायन ॥
 गोपाल स्तवराज की जु भाषा सु जथा मति ।
 श्री वृंदावन चंद दास लै रची रुचिर अति ॥
 जो नर याहि जु पढै रढै नित बढै खेम सौं ।
 कढै अंग दुति चढै रंग अंगन मढै प्रेम सौं ॥

इति श्री वृंदावनदासजी कृत
 गौतमीय तंत्रोक्त गोपाल स्तवराजकी—

❀ भाषा सम्पूर्णाः ❀



श्री राधारमण रस सागर मिलने का पता—

- १—श्री राम निवास खेतान की दुकान सबामनशालग्रामजी के मन्दिर के नीचे (लोई बाजार) वृन्दावन ।
- २—बाबा महन्त उद्धारणदासजी, कुसुमसरोवर, गवालिगर—मन्दिर, पो० राधाकुण्ड, (मथुरा) ।
- ३—हीरालालजी की दूकान, चौकबाजार, मथुरा (पिआऊ के सामने) ।

प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

- (ब्रजभाषा में) १—माधुरीबाणी, २—बल्लभरसिकजी की बाणी, ३—गीतगोविन्द, ४—गीतगोविन्द पद, ५—हरिलीला, ६—श्री चैतन्यचरितामृत, ७—गदाधरभट्ट जी की बाणी, ८—सूरदासमदनमोहनजी की बाणी, ९—वैष्णव वन्दना व भक्तनामावली, १०—प्रियादासजी की ग्रंथावली, ११—प्रेमभक्ति-चन्द्रिका, १२—विलापकुसुमाञ्जली १३—गौरांगभूषणमंजावली । १४—राधारमण रस सागर ।

- (संस्कृत भाषा में) १—अर्चविधि, २—प्रेमसम्पुट, ३—भक्तिरसतरंगिणी, ४—गोवर्द्धनशतक ।

❀ समर्पणपत्रम् ❀

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य
सकल देश प्रसिद्ध कीर्तिराशेः प्रेम भात्र सर्वस्व
कृतस्य, निरन्तर सात्विक भावा—वल्या
विभूषितस्य, दीन ता सा ग रस्य,
मधुर स्वरालापैः सर्वदा गौर
कीर्तनकर्त्ता : श्रीरामदासेति
नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीय
आराध्यदेवस्य, श्रीगुरु
देवस्य, बाबार्जामहा
राजस्य प्रीत्यर्थं
समर्पितेयं बाणी

मुद्रकः—लोक साहित्य, प्रेस, धीयामण्डी, मथुरा ।